ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218 PP. No.- 156-157
ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-15, No.- IV, Issues-26, YEAR- Oct.-Dec.-2022

चिकित्सा एवं स्वास्थ्य सेवाओं में कार्यरत परिचारिकाओं (नर्सों) के बाधक कारक (एक समाजशास्त्रीय अध्ययन)

डॉ0 शहनाज परवीन
मुहल्ला, पो०– करीमगंज जिला– गया, बोध गया (बिहार) भारत

Received-02.11.2022, Revised-09.11.2022, Accepted-15.11.2022 E-mail: lekhanisuman25@gmail.com

सारांशः ***नर्स की परिभाषा– चिकित्सा विज्ञान वेत्ताओं ने नर्सों के क्षेत्र और उत्तरदायित्वों के निर्वहन की दृष्टिगत रखते हुए नर्स शब्द को भिन्न–भिन्न तरीकों से परिभाषित करने का प्रयास किया है। प्रो० लिम्बट्रसन के अनुसार, यह (नर्सिंग) समाज के स्वास्थ्य तथा चिकित्सा से सम्बन्धित समस्त आवश्यकताओं की पूर्ति करने वाली एक गतिशील व शैक्षिक प्रक्रिया है।" श्री मिनाको मैकानोविच के शब्दों में, "चिकित्सीय स्वास्थ्य नर्सिंग कार्य करने वाले किसी भी व्यक्ति को नर्स कह सकते हैं।" रिपोर्ट ऑफ हेल्थ सर्वे प्लानिंग कमेटी के अनुसार– भारतीय प्रसंग में नर्स शब्द को इस प्रकार परिभाषित किया जा सकता है कि नर्स को विस्तृत अर्थ में एक ऐसी कला तथा विज्ञान, जो सम्पूर्ण मानव शरीर व मस्तिष्क से सम्बन्धित हो, कि तरह परिभाषित किया जा सकता है, जो मनुष्य के आत्मिक और शारीरिक स्वास्थ्य में शिक्षा व उदाहरण के माध्यम से वृद्धि व शारीरिक परिवेश को भी ध्यान में रखती है, साथ ही साथ परिवार, समुदाय व व्यक्ति को स्वास्थ्य सुविधा भी उपलब्ध कराती है।'***

कुंजीभूत शब्द– निर्वहन, गतिशील, शैक्षिक प्रक्रिया, मानव शरीर, आत्मिक, शारीरिक स्वास्थ्य, शारीरिक परिवेश, समुदाय।

सामान्यतः नर्स का कार्य समुदाय की चिकित्सा व स्वास्थ्य सम्बन्धी सेवाओं की पूर्ति करने वाली सार्वभौमिक सेवा है। जिसका जाति, गोत्र, रंग, राजनीति, राष्ट्रीयता व सामाजिक स्तर से कोई सम्बन्ध नहीं होता। स्वास्थ्य सम्बन्धी समस्त कार्यक्रमों में इसकी भूमिका अहम् तथा सर्वोपरि होती है। जिसका मौलिक एवं प्राथमिक उद्देश्य "मानव सेवा" है। 'जीवन की रक्षा करना' उसका प्रमुख कर्तव्य तथा दायित्व होता है। रोगी के कष्टों को सुनना, उसकी देखभाल करते हुए कष्टों का निवारण करने का प्रयास करना, चिकित्सक से परामर्श करना तथा उसके स्वास्थ्य में सुधार लाना, नर्सों का प्रमुख कार्य है। इतना ही नहीं, बल्कि अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर नर्सों के लिए एक नर्स संहिता' होती है जो नर्सों के कर्तव्य तथा उत्तरदायित्वों पर गहन तथा स्पष्ट प्रकाश डालती है।

अध्ययन का उद्देश्य– प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य सेवाओं में कार्यरत परिचारिकाओं (नर्सों) के बाधक कारकों की जानकारी प्राप्त करना है।

अध्ययन का क्षेत्र– प्रस्तुत अध्ययन का क्षेत्र गया जिला के चिकित्सालयों तथा नर्सिंग होम्स है।

निदर्शन– प्रस्तुत अध्ययन के लिए गया जिला के 200 परिचारिकाओं का चयन किया गया है।

चिकित्सा एवं स्वास्थ्य सेवाओं में कार्यरत परिचारिकाओं के बाधक कारक– सामान्य तौर पर व्यवहारिक रूप से देखने में आता है कि विभिन्न निर्योग्यताएं यथाः शिक्षा, अज्ञानता, रूढिग्वादिता तथा जनसाधारण में जागरूकता का अभाव इत्यादि कारक चिकित्सा एवं स्वास्थ्य सेवाओं में बाधा उत्पन्न करते हैं, क्योंकि निर्योग्यतावश व्यक्ति चिकित्सा एवं स्वास्थ्य सेवाओं की या तो उपेक्षा करता है या फिर उदासीनता बरतता है। परिणामतः अच्छे स्वास्थ्य की कल्पना करना, व्यर्थ के सपने संजोना है, जबकि व्यक्ति विशेष के लिए सबसे बड़ी पूंजी उसके स्वयं का स्वास्थ्य होता है। अच्छे स्वास्थ्य के अभाव में सबकुछ निरर्थक है। प्रस्तुत अध्याय में शोधकर्ती ने चिकित्सा एवं स्वास्थ्य सेवाओं में बाधक उत्तरदायी कारकों को जानने का प्रयास किया है। सामान्यतः बाधक कारकों में सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक धार्मिक, व्यावसायिक तथा राजनैतिक कारक भाँति–भाँति से समस्याएं उत्पन्न करते हैं। इन समस्याओं एवं तत्सम्बन्धित बाधक तथा उत्तरदायी कारकों के सम्बन्ध में सूचनादाताओं से प्राप्त तथ्य अग्रांकित है–

चिकित्सा एवं स्वास्थ्य सेवाओं हेतु बाधक सामाजिक कारकों के सम्बन्ध में अध्ययनार्थ चयनित 200 नर्सों में से अज्ञानता के सम्बन्ध में, 160 (80 प्रतिशत) नर्स सहमत, 24 (12.0 प्रतिशत), नर्स असहमत और 16 (8.0 प्रतिशत) नर्स उदासीन पाए गए हैं, अशिक्षा के सम्बन्ध में, 150 (75.0 प्रतिशत) नर्स सहमत, 26 (13.0 प्रतिशत) नर्स असहमत तथा 24 (12.0 प्रतिशत) नर्स उदासीन पाए गए हैं। रूढि/वादिता/अन्धविश्वास के सम्बन्ध में, 138 (69.0 प्रतिशत) नर्स सहमत, 20 (10.0 प्रतिशत) नर्स असहमत और 42 (21.0 प्रतिशत) नर्स उदासीन पाए गए हैं। निर्योग्यताएं अस्वच्छता आदि के सम्बन्ध में, 126 (63.0 प्रतिशत) नर्स सहमत, 30 (15.0 प्रतिशत) नर्स असहमत और 44 (22.0 प्रतिशत) नर्स उदासीन पाए गए हैं। स्वास्थ्य तथा परहेज की उपेक्षा के सम्बन्ध में 120 (60.0 प्रतिशत) सहमत, 68 (34.0 प्रतिशत) असहमत तथा 12 (6.0 प्रतिशत) असहमत पाये गये हैं।

200 सर्वेक्षित नर्सों में से चिकित्सा एवं स्वास्थ्य सेवाओं के लिए बाधक आर्थिक कारकों में आर्थिक तंगी एवं विपन्नता

अनुरूपी लेखक/संयुक्त लेखक

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-15, No.- IV, Issues-26, YEAR- Oct.-Dec.-2022

के सम्बन्ध में, 160 (80.0 प्रतिशत) नर्सों ने सहमति तथा 24 (12.0 प्रतिशत) नर्सों ने असहमति तथा 16 (8.0 प्रतिशत) नर्सों ने उदासीनता व्यक्त की है निम्न जीवन स्तर के सम्बन्ध में 150 (75.0 प्रतिशत) असहमति तथा 24 (12.0 प्रतिशत) नर्सों ने उदासीनता व्यक्त की है। निर्धनता के कारण स्वास्थ्य के प्रति उदासीनता के सम्बन्ध में 110 (55.0 प्रतिशत) नर्सों ने सहमति तथा 20 (10.0 प्रतिशत) नर्सों ने असहमति निम्न तथा उच्च आर्थिक समूहों के सम्बन्ध में 126 (63.0 प्रतिशत) नर्सों सहमति, 30 (15.0 प्रतिशत) नर्सों ने असहमति तथा 44 (22.0 प्रतिशत) नर्सों ने उदासीन, बीमारी के समय रूपये की अनुपलब्धता आदि के सम्बन्ध में, 120 (60.0 प्रतिशत) नर्सों ने सहमति, 68 (34.0 प्रतिशत) नर्सों ने असहमति तथा 10 (5.0 प्रतिशत) नर्सों ने इस सन्दर्भ में उदासीन अभिमत व्यक्त किए।

चिकित्सा एवं स्वास्थ्य सेवाओं में उत्तरदायी बाधक सांस्कृतिक कारक– विद्वानों के अनुसार संस्ति, सामान्य अर्थ में पर्यावरण का निर्मित भाग होती है, जो प्रायः भौतिक एवं अभौतिक दो प्रकार के पहलुओं से सम्बन्धित होती है। सांस्कृतिक प्रतिमान की दृष्टि से मोटा खाना, पहनना, प्रदर्शित पर्यावरण में रहने की आदतें, आहारों की अपूर्णता, परिवार नियोजन के प्रति उदासीन दृष्टिकोण तथा लापरवाही बरतना, अल्प आयु में परम्परागत विवाह व्यवस्था इत्यादि, कुछ ऐसे सांस्कृतिक कारक है, जो उन्हें ग्रामीण परिवेश में कुएं के मेढक के समान कूप मण्डूक बनाए रखते हैं। उनका सोच भी सृजनात्मक (रचनात्मक) नहीं होता, बल्कि एक निश्चित सांस्कृतिक पर्यावरण में जीवन जीने को ईश्वरीय देन मानते हैं।

चिकित्सा एवं स्वास्थ्य सेवाओं हेतु उत्तरदायी बाधक राजनैतिक कारक– यदि निर्विवाद सत्य है कि भारत में मानव जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में राजनीति हावी है, चाहे वह क्षेत्र नागरिकों के सामुदायिक जीवन से सम्बन्धित हो अथवा विशुद्ध राजनीतिक व धार्मिक क्षेत्र से सम्बन्धित क्यों न हो। राजनीतिक के परिप्रेक्ष्य में यदि राजनैतिक हस्तक्षेप हो तो कोई बात समझ में आती है, किन्तु चिकित्सा एवं स्वास्थ्य जैसी अनिवार्य, आवश्यक तथा महत्वपूर्ण सेवाओं में आवश्यक राजनैतिक हस्तक्षेप निश्चित तौर पर एक बाधक कारक है।

200 सर्वेक्षित नर्सों में से चिकित्सा एवं स्वास्थ्य सेवाओं के लिए बाधक राजनैतिक कारकों में राजनैतिक दलों की विरोधी भूमिकाओं के सम्बन्ध में 82 (41.0 प्रतिशत) नर्सों ने सहमति, 63 (32.0 प्रतिशत) नर्सों ने असहमति एवं 62 (32.0 प्रतिशत) नर्सों ने उदासीन स्थानीय नेतागिरी के बढ़ते हुए महत्व के सम्बन्ध में – 120 (60.0 प्रतिशत) नर्सों ने सहमति, 50 (25.0 प्रतिशत) नर्सों ने असहमति एवं 30 (15.0 प्रतिशत) नर्सों ने उदासीन, नेताओं द्वारा अनावश्यक हस्तक्षेप के सम्बन्ध में – 126 (63.0 प्रतिशत) नर्सों ने सहमति, 68 (34.0 प्रतिशत) नर्सों ने असहमति एवं 6 (3.0 प्रतिशत) नर्सों ने उदासीन तथा राजनैतिक भ्रष्टाचार के सम्बन्ध में – 128 (74.0 प्रतिशत) नर्सों ने सहमति, 42 (21.0 प्रतिशत) नर्सों ने असहमति एवं 30 (15.0 प्रतिशत) नर्सों ने उदासीन अभिमत व्यक्त किए हैं।

निष्कर्ष के रूप में कहा जा सकता है कि चिकित्सा एवं स्वास्थ्य सेवाओं में कार्यरत परिचारिकाओं के समक्ष सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक तथा राजनैतिक कारक बाधा उत्पन्न करते हैं। अतः सामाजिक कारकों को दूर करने के लिए स्वास्थ्य शिक्षा का प्रचार–प्रसार आवश्यक है। ऐसा होने से अज्ञानता, रूढ़िवादिता एवं अन्धविश्वासों से छुटकारा मिल सकता है तथा चिकित्सा एवं स्वास्थ्य सेवाओं का समुचित लाभ ग्रामीण एवं नगरीय जनता को मिल सकता है। निर्धनता को दूर करके चिकित्सा एवं स्वास्थ्य सेवाओं का समुचित लाभ उठाया जा सकता है। सांस्कृतिक कारकों से निपटने के लिए विलम्ब विवाह, संतुलित आहार, परिवार के प्रति जागरूकता आवश्यक है। राजनैतिक बाधाओं में राजनैतिक भ्रष्टाचार, स्थानीय नेतागिरी, अनावश्यक राजनैतिक हस्तक्षेप शामिल है, जिसे दूर करना आवश्यक है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. शर्मा, रमाकान्त : नर्सें : सामाजिक एवं व्यवसायिक पक्ष ए राष्ट्रीय शोध पत्रिका, सामाजिक विवेचन विशेषांक : चिकित्सा समाजशास्त्र, समाजशास्त्र हिन्दी कार्य समिति उदयपुर प्रकाशित : मोहन लाल सुखाडिय्या वि० वि० उदयपुर, राजस्थान 1990.
2. शान्ता, मोहन : स्टेट ऑफ नर्सेस इन इण्डिया ए उप्पल पब्लिशिंग हाउस नई दिल्ली, 1995.
3. सक्सेना, पी०सी० : नर्सों की सामाजिक आर्थिक दशाओं एवं समस्याओं का अध्ययन, लघुशेष प्रबन्ध, आगरा वि० वि० प्रेस आगरा, 1994.
4. सिरिक, जी०एल० : डॉक्टर एण्ड नर्सेस ए अमेरिकन जनरल ऑफ पब्लिक हेल्थ शिकागो, प्रेस नई दिल्ली, 1971.
5. स्लूमन, एम०आर० : स्टडी ऑन डॉक्टर नर्स रिलेशनशिप इन द हॉस्पिटल, युग प्रकाशन इलाहाबाद, 1972.
6. सिंह, एस०डी० : वैज्ञानिक सामाजिक अनुसंधान एवं सर्वेक्षण के मूल तत्व, कमल प्रकाशन इंदौर (म०प्र०) 1980.

*****